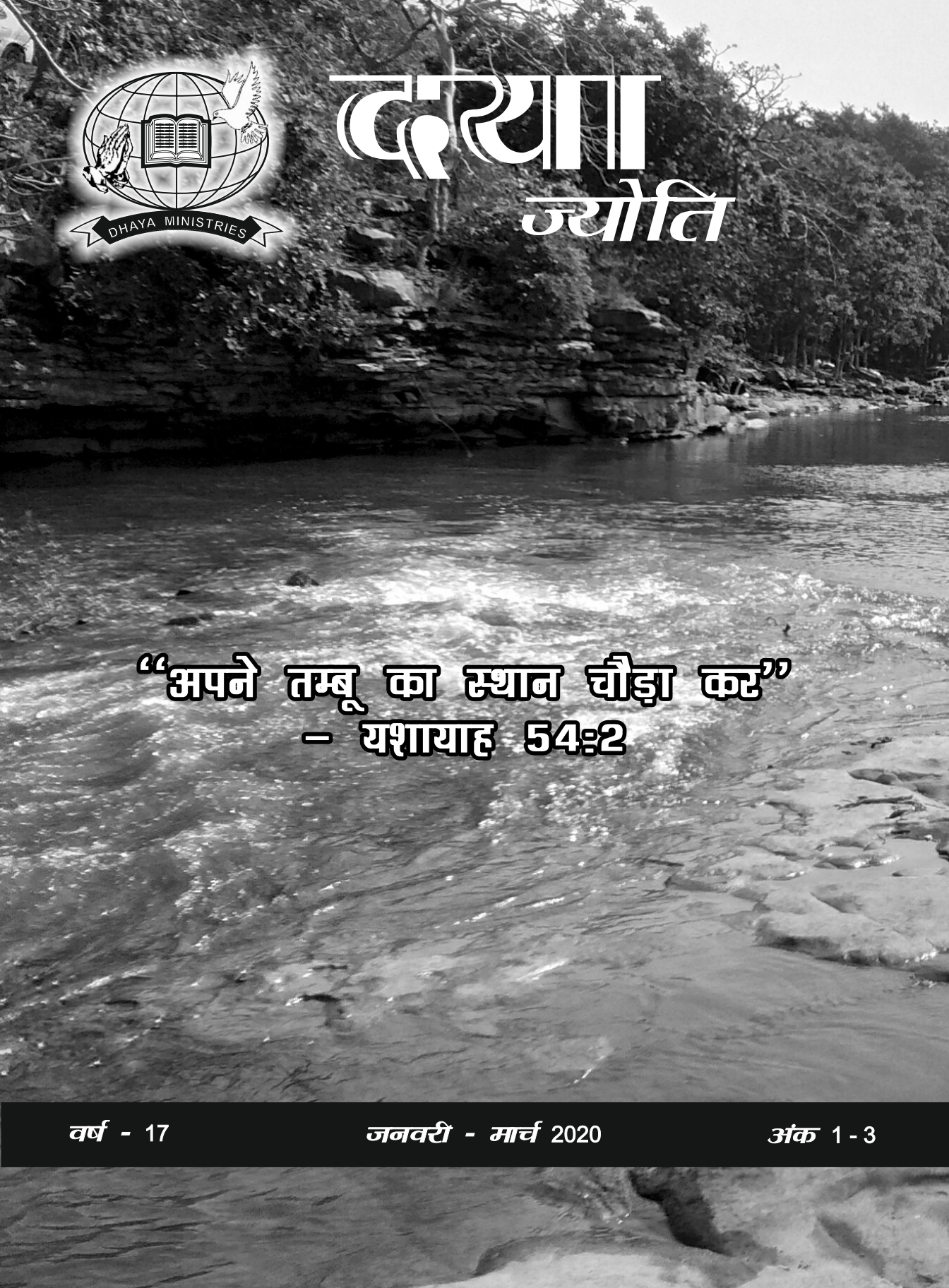

दया ज्योति

"अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर"
– यशायाह 54:2

वर्ष - 17 जनवरी - मार्च 2020 अंक 1 - 3

सम्पादक की कलम से.....

प्रभु यीशु मसीह के नाम से आप सभी को नये वर्ष की शुभकामनायें! आप सब के सामने नये वर्ष की आशीष के संग नई चुनौतीयाँ है। जिसे आप स्वयं सामना नही कर पायेंगे। आपको चुनौतीयों का सामना करने के लिये सहायक की आवश्यकता है। इसलिये प्रभु यीशु ने कहा – ''मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे'' – (यूहन्ना 14:16)।

परमेश्वर ने नये वर्ष में प्रतिज्ञा किया – ''अपने तम्बु का स्थान चौड़ा कर'' (यशायाह 54:2)। प्रभु परमेश्वर चाहते है कि आप इस नये वर्ष में अपने स्थानों को चौड़ा बनायें। आप अपने स्थानों को कैसे चौड़ा बना सकते है ? उसके लिये एक अच्छा उदाहरण बाईबल से मिलता है, याबेस की माता ने यह कहकर उसका नाम याबेस रखा, ''मैं ने इसे पीड़ित होकर उत्पन्न किया।'' हमे इसका उल्लेख नही मिलता है, क्यों याबेस की माता ने उसे पीड़ित होकर पैदा किया ? लेकिन याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर से प्रार्थना करके पुकारा कि उसका स्थान चौड़ा हो और वह आशीषित हो। उसकी प्रार्थना को परमेश्वर ने सुनकर उसे अपने भाइयों से अधिक प्रतिष्ठित कर दिया।

आप अपने तम्बु को चौड़ा करना चाहते है, तो याबेस के समान प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना के संग पुकारे तब आप सचमुच आशीष पाकर देश में बढ़ेंगे। परमेश्वर की मनसा भी यही यह की आप देश में बढ़े और आशीष के संग रहें।

प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से पिछले माह में क्रिस्मस प्रोग्राम मिश्न फिल्ड़ों में आयोजित किया गया। बिना किसी रूकावट से चलाने में प्रभु परमेश्वर ने मद्द की। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो। जिससे अनेक लोग शुभ संदेश सुनकर उसके द्वारा आशीषित हुये। जिन्होंने सुना है, वे अपने जीवन में प्रभु यीशु को मुक्तिदाता के स्वरूप में स्वीकार करने के लिये प्रार्थना करें। आप सभी के लिये प्रार्थना में निरन्तर स्मरण करते रहते है। जिस प्रकार आप लोगों ने दया सेवकाई को अपनी धन राशी से मद्द की, वैसे ही निरन्तर करते रहें। प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता आप सब के साथ वर्ष भर बना रहें। आमीन्।

प्रभु यीशु की सेवा में
आपका प्रिय भाई आलफ्रेड डेनियल

''तू ने अपने उपदेश इसलिये दिए हैं, कि वे यत्न से मान जाएँ'' – भजन 119:4

ज्योति को फैलाये

भाई आलफ्रेड डेनियल

ज्योति को फैलाने के लिये ज्योति आपके अन्दर होना चाहिये। जब तक आपके अन्दर ज्योति नही आयेगी तब तक आप ज्योति को पहचन नही पायेंगे। ज्योति ही अन्धकार को दूर करती है। जहाँ अन्धकार बना रहता है वह ज्योति नही रहती है। जहाँ पर ज्योति आ जाती है वहाँ पर अन्धकार दूर हो जाती है।

परमेश्वर चाहते है कि आप नये वर्ष में ज्योति के समान बने और ज्योति को फैलाये। ज्योति के समान बनने के लिये पहले जानना है कि ज्योति क्या है ? उसका उपयोग क्या है ? उसका महत्व हमारे जीवन में क्या है ? अगर संसार भर में देखेंगे तो पायेंगे कि ज्योति ही प्रकाश देती है। अन्धकार को दूर करने के लिये ज्योति का इस्तमाल किया जाता है। अन्धकारा में पायी जाने वाली वस्तुऐं दिखाई देने के लिये ज्योति का उपयोग किया जाता है।

ज्योति को समझने के लिये उसके निकट आने की आवश्यकता है। जब तक आप ज्योति के निकट नही आयेंगे तब तक उसे समझ नही पायेंगे। हमारे देश में निवास करने वाले हमारे प्रिय भाई–बहन अपना त्यौहार को बड़े धूमधाम से बनाते है। आपास में मिठाईयाँ बाँटते है। अपने घरों को दीयाओं से सुस्रजीत करते है। यदि शाम या रात्रि के वक़्त में आप उनके घरों को देखेंगे, तो दीयाओं के कारण उनका घर ज्योतिमय सा दिखाई देता है, और यह दृश्य देखने में अति सुंदर एवं मनभावना रहता है। दीयाओं की सजावट से उनका घर अन्य घरो के तुलना से अति प्रकाशमान एवं सुंदर दिखाई देती है। उनका घर प्रकाशमान एवं सुंदर क्यों दिख रहा था ? उसका कारण उन्होंने अपना घर दीयाओं से प्रकाशमान कर रखा था।

दीया कैसे प्रकाश देता है ? दीया के अन्दर तेल या घी पायी जाती है, उस तेल या घी में बत्ती को डुबाकर दीया के बाहर की ओर रखी जाती है। जब बत्ती जलाया जाता है, तो बत्ती जलने लगती है। बत्ती जलते ही दीया प्रकाश देना शुरू कर देता है। जब तक दीया के अन्दर में तेल या घी रहता है, तब तक बत्ती जलती रहती है। यदि दीया के अन्दर तेल या घी खत्म हो जाता है, तो बत्ती भी जलना बाँध कर देता है। अगर फिर से दीया के अन्दर में तेल या घी डाल दिया जाये तो दीया जलने लगती है। दीया को जलाने का श्रोत तेल या घी रहती है। जिसे दूरू से नही देख सकते है। दूरू से सिर्फ दीया के प्रकाश को देख पाते है। यही प्रकाश अन्धेरे को दूरू करती है, और दूसरो को उसकी ओर आकृषित करती है। हमें यह एहसास करवाती है कि उसी के कारण प्रकाश है।

बाईबल बतलाती है ''ज्योति जगत में आई लेकिन मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक

प्रिय जाना'' – (यूहन्ना 3:19)। प्रभु यीशु मसीह ही जगत की ज्योति है जो इस संसार में आये। जिनके काम बुरे थे वे उसे स्वीकार नही किये और वे ज्योति के निकट नहीं आये, ऐसा न हो कि उनके कामों पर दोष लगाए जाए।

यीशु जीवन की ज्योति बनकर इस पृथ्वी में आये। ताकि जो अन्धकार में है, वह ज्योति पाये। ज्योति अन्धकार को दूरू करती है। अगर आपके अंदर यीशु का जन्म हुआ है तो आपके अंदर ज्योति पैदा हुआ है। जो आपके अन्दर की अन्धकार को आप से दूरू करती है। प्रभु यीशु ने आपको अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है (1पतरस2:9)। ताकि आप उसके अद्‌भुत ज्योति में आये और उसकी ज्योति से प्रकाशमान होकर संसार में प्रकाश देये।

जब तक बत्ती दीया के तेल में रहती है, जलती रहती है। उसी के समान आपके अंदर यीशु रहेंगे तो आप ज्योति के समान प्रकाशमान रहेंगे। आपके अंदर यीशु नही रहेंगे तो ज्योति नही रहेगी। जो अन्धकार में रहते है, वह नही जानते है कि कहाँ जा रहे है ? या क्या कर रहे है ? या क्या हो रहा है ? अन्धकार ने उन्हें अपना गुलाम बनाकर रखा है। इसलिये वे चाहने वाले कार्य नही कर पाते है, जो नही चाहते है वही कार्य कर पाते है, क्योंकि अन्धकार उनसे करवाता है। गुलाम अपनी मर्जी से कुछ नही कर सकते, जिसके वह गुलाम है उसी के निर्देश में कार्य कर पाते है। जब तक अन्धकार प्रभुता करता रहेगा, तब तक अन्धकार की क्रिया प्रकट होती रहेगी। अन्धकार अपने जीवन से दूरू करने के लिये ज्योति को स्थान देना जरूरी है। यदि ज्योति को सम्पूर्ण जीवन में स्थान न देयेंगे, तो आज्ञा न माननेवालों में कार्य करनेवाली आकाश का अधिकारी हाकिम अर्थात् उसकी आत्मा के अनुसार शरीर की लालसाओं और शरीर और मन की इच्छाएँ पूरी करते हुए स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान रहोगें।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें, वे नाश न हो; परन्तु अनन्त जीवन पाये। परम पिता अपने बनाये गए, मनुष्यों से प्रेम करता है और चाहता है कि मनुष्य अन्धकार की गुलामी से छुटकारा पाये। इसलिये मनुष्य अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश करवाया। जिस में मनुष्य को छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त हो (कुलु.1:13,14)। यदि अब तक आप ने ज्योतिमय यीशु को विश्वास नही किया है तो उसे विश्वास करें, अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओ में से जिलाया, तो आप निश्चय उद्धार पायेगें। उद्धार का अर्थात् मुक्ति या छुटकारा। अगर आप अन्धकार से सम्पूर्ण रीति से छुटकारा या मुक्ति चाहते है तो अपने सम्पूर्ण जीवन को ज्योतिमय यीशु के हाथों में सौपे। तब ही अन्धकार की गुलामी से आपको छुटकारा मिलेगा (यूहन्ना 8:12)।

पहले आप अन्धकार में थे, तब व्यभिचार और अशुद्धता और लोभ, निर्लज्जता, मूढ़ता की बातचीत, ठट्ठे, मूर्त्तिपूजा जैसे कार्य हुआ करते थे। परन्तु अब आप प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की

सन्तान के समान चलो। क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है (इफि.5:8,9)। जब आप ज्योति का सन्तान बन गए, तो आपके जीवन से दूसरों के लिये भलाई प्रकट होनी चाहिये। प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर ने आपको इसलिये बुलाया, कि आपके द्वारा अपनी भलाई को प्रकट करें। इसे समझते हुए आप अपने कार्यों को करें, ताकि आपके बुलाने वाले परमेश्वर का नाम की महिमा हो।

दूरू से दीया को देखे, तो देखने वालों को प्रकाश ही दिखाई देती है, लकिन उसके अन्दर में रहने वाली तेल या घी नही दिखाई देती है। उसी के समान आपको देखने वाले आपकी ज्योति की प्रकाश देखते है, लेकिन आपके अन्दर रहने वाले ज्योतिमय यीशु को नही देख पाते। किन्तु आपके व्यवहार एवं चाल–चलन से उसकी ज्योति पाते है। आपकी ज्योति के मध्यम से परमेश्वर चाहते है जो अन्धकार में पाये जाते है; उन्हें अश्चर्यमय ज्योतिमय यीशु के पास लेकर आये। ताकि वे अन्धकार की गुलामी से मुक्त हो।

यीशु ने कहा – ''तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता'' (मत्ती 5:14)। प्रभु परमेश्वर ने आपको ज्योति बनाकर प्रकाशमान किया है। ताकि आपका प्रकाश इस प्रकार से फेले जो छिप नही सकता है। वह आपको ऊँचाई पर खड़ा करने जा रहा है; जो आपके मन में न कभी उबरा है और न कभी आपकी चित पर प्रकट हुआ है। जो उसकी आज्ञा मानकर सम्पूर्ण जीवन को ज्योतिमय यीशु के हाथ में सौपते है। उनके लिये परम पिता बहुत जल्दी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। भाविष्यवक्ता कहते है, ''देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकारा छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा। जाति जाति तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे'' (यशा.60:2,3)। प्रियों! देखिये, आपकी आज्ञाकारीकता के कारण परमेश्वर आपके स्थान को इतना ऊँचा करने जा रहा है। जो आप अभी समझते नही है। आपकी प्रकाश की ओर जाति जाति के लोग आने वाले है। जाति जाति के लोग ही नही अपितु राजा अर्थात् प्रभुता करने वाले भी आपकी ओर आने का समय आ गया है। इसलिये आप परमेश्वर की ज्योति के समान प्रकाश देते रहें।

यीशु आगे कहते है, ''लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है'' (मत्ती 5:15)। आजकल दीया जलाने की परमपरा नही है। नये युग के बच्चे अधिकांश दीया को जानते ही नही और उसकी महत्व को पहचनते ही नही है। बिजली या ट्युय्यूब लाईट या बल्ब या मोमबत्ती आने से दीया का चाल चलन समाप्त हो गया है। पहले दीया ही का चाल चलन था। तब लोग दीया को उजियाला के लिये उपयोग करते थे। लेकिन कोई भी दीया का जलाकर पैमाने के नीचे नहीं रखते थे। अगर दीया को पैमाने के नीचे रखेंगे, तो घर में रहने वालो को उजियाला नही मिलेगा। घर में उजियाला मिलने के लिये दीया को जलाकर दीवट पर रखते थे, ताकि घर के सभी लोगों को प्रकाश पहुँचे। उसी प्रकार से आप ने जो ज्योति पायी है, उसे छुपाकर रखने से किसी के लिये भी उपयोगी नही रहेगी। ''क्योंकि जो कोई बुराई करता है,

वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए'' (यूहन्ना 3:20)। जो दोष या आरोप लगाते है, वे कभी भी ज्योति के पास नही आते है। यदि आप दूसरों को दोष लगाते है, तो आपके अन्दर किसका गुण है। आप स्वयं जांझकर देखें! बाईबल बतलाती है कि जो दूसरों पर दोष लगाते है, उसकी फितरत शैतान की सी है। क्योंकि शैतान ही रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने दोष लगाया करता था, जो गिर दिया गया है (प्रका. 12:10)। अतः आपका फल दूसरों के सामने ऐसा प्रकट होना चाहिये, ताकि आपकी ज्योति की क्रियाओं को देखकर दूसरे ज्योतिमय प्रभु परमेश्वर के पास आयें। आपका जीवन आपके घर में रहने वालो के लिये प्रकाश का काम करना चाहिये। तब ही आपके परिवार के सद्स्य आपकी ज्योति देखकर प्रभु परमेश्वर की अद्भुत ज्योति की ओर आयेंगे। ''आपका उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे आपके भले कामों को देखकर आपके पिता को जो स्वर्ग में है; बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)। जैसे यीशु भलाई करता हुआ, फिरता रहा; वैसे ही आपका जीवन भी भलाई करने वाला होना चाहिये। क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई है, जो आप से प्रकट होती रहनी चाहिये।

ज्योति का फल धार्मिकता है। यह फल आपके जीवन द्वारा प्रकट होनी चाहिये। अब्राहम के बारे में पढ़ते है, 'अब्राहम कामों से धर्मी नही गिना गया'। अपितु ''अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया'' (रोमि.4:3)। क्योंकि धर्म के कार्य मैले चिथड़े के समान है (यशा.64:6)। इसलिये कोई भी व्यक्ति अपने धर्म के कार्यों से धर्मी नही बन सकता है। ''किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। ताकि उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे'' (रोमि.5:7–9)। प्रभु यीशु मसीह के द्वारा धर्मी ठहरायें गए है, तो उस पर विश्वास करना अनिवार्य है। क्योंकि धार्मिकता पाने के लिये मन से विश्वास करना पड़ता है। विश्वास ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा धर्मी बन सकते है और प्रभु परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते है।

आपको यह विश्वास करना है, 'मेरे पापों और अधर्म के लिये यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया और मेरे लिये मर गया और मेरे लिये गाड़ा गया, और मेरे लिये तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा, और स्वर्ग पर चढ़ गया और सर्वशाक्तिमान ईश्वर पिता के दाहिने हाथ जा बैठा, जहाँ से वह जीवतों और मृतकों का न्याय करने को फिर आयेगा। इसे मैं विश्वास करता हूँ पवित्रात्मा पर, प्रचलित पवित्र कलीसिया पर, पवित्र लोगों की संगाति, पापों की क्षमा, देह के पुनरूत्थान और अनन्त जीवन पर'। यही विश्वास का वचन है, जिस पर आपको विश्वास करना है, जिसे आप ज्योति के फल जो धार्मिकता है, उसे पहन पायेंगे और धर्मी बन जायेंगे। यही धार्मिकता का झिलम है; जो आपको शैतान की तीरों से सुरक्षा प्रदान करती है। धार्मिकता का वस्त्र पहिने वाले मात्र ही प्रभु परमेश्वर के संग घूमने के योग्य ठहरते है। अब आप जान पाये होगे, ज्योति का फल जो धार्मिकता है, वहा कितना अधिक आवश्यक है।

ज्योति का फल सत्य है। यीशु ने कहा – ''मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ'' (यूहन्ना 14:6)। यदि ज्योतिमय यीशु आपके अन्दर आया है, या जन्म लिया है, तो आपके अन्दर सत्य का जन्म हुआ है। अगर आपके अन्दर सत्य का जन्म नही हुआ है, तो झूठ का निवास है। झूठ का पिता शैतान है। वह अपनी लालसाओं को पूरा करता है। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर नही रहता है, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है वरन् झूठ का पिता है' (यूहन्ना 8:44)।

परमेश्वर चाहते है कि आप स्वतंत्र हो। जब तक आप झूठ बोलते रहेंगे तब तक झूठ का पिता की गुलामी में बनें रहेंगे। इसलिये यीशु ने कहा – ''सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा'' (यूहन्ना 8:32)। सत्य क्या है ? सत्य प्रभु यीशु मसीह है। जिसको विश्वास कर, उसकी दी हुई आज्ञाओं में चलेंगे तो ज्योतिमय यीशु आपके संग बना रहेगा। अन्यथा आप ने उसे पहचना ही नही है। जानने में और पहचनने में अन्तर है। आप डोनाल ट्रप को जानते है कि वह आमेरिका के राष्ट्रपति है। लेकिन व्यक्तिगत रीति से उन्हें पहचनते नही है। उसी के समान यीशु मसीह को जानना ओर है, व्यक्तिगत रीति से पहचनना ओर है। अधिकांश लोग यीशु को जानते है, लेकिन जिसने उस पर विश्वास कर अपना प्रभु माना है और उसकी आज्ञाओं में चलते है, उसी ने यीशु मसीह को पहचना है। क्या आप यीशु को पहचनते है ? या जानते है ? यदि अब तक नही पहचना है, तो अभी भी समय है; उसे पहचने। वह आप से प्रेम करता है, बिना किसी शर्त से। उसका प्रेम स्वार्थी नही है और आप से न कुछ पाने की आशा से प्रेम करता है। उसका प्रेम पवित्र है। उसके प्रेम को 'आगापे लव' कहा जाता है। इसका अर्थात् 'बिना आशा का प्रेम'। वही सत्य है।

इस सत्य को आप जाने तो शैतान की झूठ से, अन्धकार की गुलामी से, संसारिक अभिलाषाओं एवं लालषाओं से, शारीरिक वासनाओं से स्वतंत्रता मिलेगी। 'सत्य को जानोगे, सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा'। स्वतंत्र होने के उपरांत ज्योति का फल भलाई, और धार्मिकता और सत्य पर बने रहें और उसके अनुसार चलते रहें। ताकि आप निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहे, जिनके बीच में आप जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते है (फिलि.2:15)।

आपका चाल–चलन प्रभु के योग्य हो; और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और आप में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे और आप परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ, उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाओ, यहाँ तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको, और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमे इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हो (कुलु.1:10–12)। यीशु ने कहा – ''जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा'' (यूहन्ना 8:12)। प्रभु परमेश्वर ही आपको पाया हुआ, ज्योति फैलाने में मद्द करें। आमीन्।

प्रश्नावली - 21 *के उत्तर*

1) प्रशंसा, महिमा, आदर – 1 पतरस 1:7, 2) सुसमाचार सुनाने वाली – 1 पतरस 1:12, 3) चाँदी–सोने, नाशवान वस्तुओं – 1 पतरस 1:18, 4) घास – 1 पतरस 1:24, 5) निर्मल आत्मिक दूध – 1 पतरस 2:2, 6) एक चुना, वंश, राज–पद्धारी याजकों का समाज, पवित्र लोग, निज प्रजा – 1 पतरस 2:9, 7) परमेश्वर – 1 पतरस 2:17, 8) गाली, गाली – 1 पतरस 2:23, 9) नम्रता, मन की दीनता, 10) आशीष के वारिस होने के – 1 पतरस 3:9, 11) शरीर, घात – 1 पतरस 3:18, 12) बपतिस्मा – 1 पतरस 3:21, 13) विरोधी शैतान – 1 पतरस 5:8, 14) परमेश्वर के लोगों – 1 पतरस 4:17, 15) दीनता – 1 पतरस 5:5.

बाईबल प्रश्नावली - 22

सभी प्रश्न 2 पतरस की पत्री से लिये गये है। इन प्रश्नों का उत्तर, अध्याय एवं आयत की संख्या के संग 20 मार्च से पहले लिखकर भेजे।

1. जिसने हमे अपनी ही.....और.....के अनुसार बुलाया है।
2. किस लिये यत्न करते जाना है ?
3. मेरे.....के गिराए जाने का समय.....आनेवाला है।
4. भक्त जन.....के द्वारा उभारे जाकर.....की ओर से बोलते थे।
5. परमेश्वर ने किसको नही छोड़ा ?
6. प्रभु किस से निकालना और किसको दण्ड देना जानता है ?
7. जो व्यक्ति जिससे.....गया है, वह उसका.....बन जाता है।
8. पृथ्वी भी.....में से बनी और.....में स्थिर है।
9. वर्तमान का आकाश और पृथ्वी क्यों रखा गया है ?
10. कोई.....हो, वरन् सब को.....का अवसर मिले।
11. प्रभु का दिन कैसे आयेगा ?
12. पृथ्वी और उस पर के.....जाएँगे।
13. आकाश.....जाएँगे।
14. पौलुस ने कैसे लिख है ?
15. पतरस किसमें बढ़ने को लिखता है ?

भण्डारी

बहन ज्योस्फीन डेनियल

बाईबल की पाठ : लूका 16:1-11; 1कुरि 4:1-4; उत्पत्ति 39:1-4; 2 राजा 5:19-27

भण्डारी का अर्थ है, 'एक स्वामी अपना कार्यों को दूसरे के हाथों में सौपता है कि वह उत्तरदायित्व के संग सौपे गये कार्यों को सही रीति से देखभाल करें। भण्डारी का शब्द सुनते ही अनेक लोग सोचते है कि धन के बारे में ही कह जा रहा है। ऐसा बिलकुल नही है, भण्डारी का शब्द सब के लिये उपयुक्त रहता है।

बाईबल की पाठ में हमने पढ़ा, ''किसी धनवान का एक भण्डारी था, और लोगों ने उसके सामने उस पर यह दोष लगाया कि वह तेरी सारी सम्पत्ति उड़ाए देता है। अतः उसने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुन रहा हूँ? अपने भण्डारीपन का लेखा दे।

प्रियों! हमारे अत्मिक कार्यों में भण्डारीपन कहाँ पर है यह मालुम होना चाहिये। हम किस लिये आये है, हम किधर है और कहाँ जा रहे है यह भी मालुम होना है। तब ही कहाँ पर समाप्त करना है, यह मालुम होगा। यदी मालुम नही रहेगा, तो समाप्त कैसे करेंगे। Google map में हम कहाँ पर है, और कहाँ जा रहे है, इसे लिखने पर ही Map हमारा मार्ग दर्शन कर पायेंगा।

इस संदेश के द्वारा हम कहाँ पर है और कहाँ जा रहे है, इसे पढ़ने जा रहे है। कैसे चलना है, इसे हम सिखने जा रहे है। परमेश्वर का राज्य के लिये भण्डारी कहलाये जाते है (1 कुरि. 4:1-4)। परमेश्वर की महिमा के लिये उपयोग होना ही भण्डारी है। भण्डारी का शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है। इसका अर्थ Manager या Guardian है। जो आपके स्वयं का नही है, लेकिन उसका देखभाल करने का दायित्व आपका है। एक बैंक Manager के पास करोड़ो रूपये है। और उसके locker की पास चाबी भी है। उन रूपयों को वह स्पर्श भी कर सकता है, लेकिन यह रूपया उसका नही है। उसको दिया गया दायित्व यही है।

उत्पत्ति 39:1-4 में पढ़ते है, जब यूसुफ मिस्त्र में पहुँचाया गया, तब पोतीपर नामक एक मिस्त्री ने जो फ़िरौन का हाकिम और अंगरक्षकों का प्रधान था, उसको इश्माएलियों के हाथ से, जो उसे वहाँ ले गए थे, मोल लिया। यूसुफ अपने मिस्त्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था इसलिये वह भाग्यवान् पुरूष हो गया, और यूसुफ के स्वामी ने देखा कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता है उसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है। तब उसकी अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई, और वह उसकी सेवा टहल करने के लिये नियुक्त किया गया; फिर उसने उसको अपने घर का अधिकारी बना के अपना सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया। प्रबंधन करने की जिम्मेदारी भण्डारी ही की है।

उसका स्वामी ने सब कुछ यूसुफ के हाथ में प्रबंधन करने के लिये सौपा। जो यूसुफ के हाथ में सौपा गया, उसे उसने प्रबंधन किया। लेकिन यह यूसुफ की सम्पत्ति नही थी। उसको अनुभव

करने का अधिकार नही था। इसी को Guardian कहते है। Steward का शब्द आते ही अनेक सोचते है कि यह धन के विषय में है। धन मात्र ही नही, इस संसार भर में अनुभव करने की सारी वस्तुऐं हमारे हाथ में सौपी गई है। जिसने हमारे हाथ में सौपा है, उसको हमे लेखा देना पड़ेगा। इसका मूल्य यह है कि जो कुछ हमने पाया है वह सभी परमेश्वर से ही पाया है। जो हम देखते है और जो नही देखते है, यह सब कुछ परमेश्वर ही का है। इसमें आप भी सामिल है। आप परमेश्वर के है, तो जो कुछ आपका है वह सब परमेश्वर का है।

परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी है (प्रेरितों 17:24)। स्वर्ग और सब से ऊँचा स्वर्ग भी, और पृथ्वी और उसमें जो कुछ है, वह सब तेरे परमेश्वर यहोवा ही का है (व्यवस्था. 10:14)। पृथ्वी और जो कुछ उसे में है यहोवा ही का है, जगत और उस में निवास करनेवाले भी (भजन 24:1)। आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, उसे उसी ने स्थिर किया है (भजन 89:11)। 1 इतिहास 29:11,12 में पढ़ते है, हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा है। धन और महिमा तेरी और से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ्य और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं।

परिवार, धन, महिमा, आरोग्यता, व्यवस्य, कार्य यह सब कुछ परमेश्वर का है, जो हमने पाया है। वह सब उसका था, उसने हमें दिया है। जो आपको सौपा गया है, उसका दायित्व आपको देना है। जो दूसरों को सौपा गया है, उसका दायित्व वे देयेंगे। इसलिये दूसरो के कार्य में हस्तक्षेप न करें। आप दूसरो को देखने की आवश्यकता ही नही है। जो आप ने परमेश्वर के द्वारा पाया है, वह पति/पत्नी, बच्चें, माता–पिता, और आपका कार्य, सम्पत्ति, समय और सब कुछ परमेश्वर ने आपको सौपा है। अनेक परिवार में परेशानी का कारण यह है, पति, पत्नी, बच्चें, वस्तुऐं, सम्पत्ति यह सब कुछ मेरे लिये ही है, ऐसा सोचकर अनुभव करते वक़्त दिक़्कत आती है। जो मेरे पास है, वह मेरा नही है, इसे परमेश्वर ने मुझे दिया है इस प्रकार का एहसास रहना चाहिये। उसको मैं कैसे उपयोग कर बढ़ता हूँ, इसे जांझकर देखना चाहिये। मैं अकेले ही सब कुछ अनुभव करना है और सिर रहकर शासन करना है, ऐसे सोचकर कार्य करने वाले परिवार में निश्चय ही शैतान कार्य करता है।

सब कुछ मेरा है, ऐसा सोचने से दिक़्कत आती है। कुछ घरों में पति/पत्नी यह नही सोचते है कि परमेश्वर ने मुझे अपना साथी दिया है। जो मैं बोलता हूँ, वही होना चाहिये। मेरी इच्छा ही पूरी होनी चाहिये। मेरी एहसास ही को सब समझना चाहिये; इस प्रकार की सोच से परिवार में दिक़्कत आ जाती है। कुछ लोग अपनी इच्छा पूरी करने के लिये अपने बच्चों को विवश करते है। इसके बारे में वे नही सोचते है कि उनके बच्चे क्या पढ़ सकते है? या क्या कर सकते है? कुछ घरों में माता–पिता चाहते है कि उनके बच्चे जिनका विवाह हो गया है वे भी उनकी मर्जी से जीवन जीये। माता–पिता को अपने बच्चों के प्रति प्रेम और अधिकार भी है। लेकिन यह अधिकार परमेश्वर से पाया है, इसका एहसास रहेंगा, तो वहां पर परमेश्वर की इच्छा पूरी होगी। उसकी ओर से पाया है और उसी को सौपना है, इसका एहसास रहेना चाहिये। आपको दिया हुआ घर, diamond, वस्तुऐं क्यों न हो, इन सबको पृथ्वी में से ले नही जा सकते है, क्योंकि यह सब आपका स्वयं का नही है।

इस संसार में कुछ नही लाये है, और कुछ नही ले जायेंगे। इस प्रकार की स्थिति है, तो ओर मुझे चाहिये, सब कुछ मेरा है। इस प्रकार से कैसे कह सकते है ? इस संसार में कुछ ले ले, ऐसा सोचने वाला कार्य किस प्रकार से रहेगा। सभोपदेशक 5:15 में पढ़ते है, ''जैसा वह माँ के पेट से निकला वैसा ही लौट जाएगा; नंगा ही, जैसा आया था, और अपने परिश्रम के बदले कुछ भी न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जा सके''।

पति, पत्नी, बच्चे आपके नही है, लेकिन परमेश्वर ने आपको भरोसा करके यह सबंध दिया कि आप इस रिश्ते को कैसे निभायेंगे। यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा (भजन 127:1)। परमेश्वर ने जो दिया है, वह देख लेगा, इस प्रकार से सोचकर, ऐसे ही छोड़ देने के लिये परमेश्वर ने किसी से नही कहा है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा की सृष्टी कर, उन्हें बगीचें के बीच में रखा, ताकि वे उसकी देखभाल करें और उसकी रक्षा करें। विश्वासयोग्य समझकर ही दायित्व सौपा है, इसलिये भण्डारी का शब्द हमारे लिये उपयुक्त है।

बच्चों को प्रबन्ध करने का दायित्व परमेश्वर ने आपको दिया है। इस संसार में मेरा कुछ भी नही है, जो मेरा है वह सब परमेश्वर का है, इस प्रकार से सोचेंगे तो इसे सही रीति से प्रबंध करने के लिये सिख पायेंगे। परमेश्वर से बल भी पायेंगे। आपके बच्चें, आर्थीक स्थिति, समय, परिवार, पति, पत्नी, रिश्तेदार सही रीति से प्रबंध करते वक्त ही आप सही भण्डारी रहेंगे। क्यों आपको सब कुछ दिया गया है ? उसे आपको बढ़ना है, दूसरो को भी बाँटना है। परमेश्वर से आपने पाया है, इसलिये निर्धनों को ठट्ठा नही करना चाहिये। क्योंकि आप ने जो कुछ भी पाया, वह सभी परमेश्वर से ही पाया है। यदि दूसरों को कम़ मिला है, उनसे बढ़कर आप धर्मी नही है, लकिन यह सब परमेश्वर का अनुग्रह है।

भण्डारी का मूल्य : धन हमारे लिये अति आवश्यक है। लेकिन उसके लिये ही कार्य नही करें। क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराई है। यदि धन पर आशा रखें, तो आप स्वार्थ पर आधारित हो जायेंगे है। जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है परन्तु धर्मी लोग नये पत्ते के समान लहलहाते हैं (नीति. 11:28)।

बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चाँदी से दूसरों की प्रसन्नता उत्तम है (नीति. 22:1)। इसलिये किसी भी व्यक्ति के पास धन ठहरा नही रहता है। लेकिन आपका स्वभाव ही आखीरी तक आता है। मृत्यु के उपरान्त भी उसका फल मिलता है। इसलिये आप धर्मी, पवित्र, अच्छे बने रहें। पहले आपको यह जानना चाहिये कि आप किसके है ? आप परमेश्वर के द्वारा सृष्टी किये गये है। कोई भी अपने माता-पिता को चुनकर पैदा नही होता है। परमेश्वर मात्र ही इसमें अपनी इच्छा को पूर्ण करता है। दूसरा आपको छुड़ाने के लिये परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र को इस घरती में भेजा। यीशु मसीह के लहू के द्वारा आप छुड़ाये गये है, इसलिये आपको यह एहसास होना चाहिये कि आप उसके नीजि है। परमेश्वर ने आपको घर, पति, पत्नी, बच्चें, धन, वरदान, समय मात्र ही नही उद्धार भी दिया है।

कुछ को बहुत अधिक और कुछ को कम़ दिया गया है। चाहे कम़ या अधिक दिया गया हो, लेकिन कोई यह नही कह सकता है कि मुझे कुछ भी नही दिया गया है। परमेश्वर ने आपको जीवन

दिया है, वह जीवन भण्डारी का है। किस प्रकार से आप अपना जीवन जी रहें है, उसे जांझकर देखें। आपको यह सोचना है जो 24 घण्टे दिये गये है, उसे आप कैसे या किसके लिये उपयोग करते है, और परमेश्वर के लिये कितना समय व्यय करते है। परमेश्वर ने आपको समय दिया है, उसके लिये आप ही भण्डारी है। आपको बुलाकर कोई दायित्व सौपेंगे तब ही आप भण्डारी है, ऐसा न सोचे। इस संसार जो दायित्व दिया गया है, उसका लेखा सभी को देना पड़ेगा।

भण्डारी रहने वालों को पहले जानना है, परमेश्वर के लिये आप नीजि है। दूसरा परमेश्वर ने आपको यीशु मसीह के लहू से छुड़के आपको अपना नीजि बन लिया है। तीसरा जो आप ने पाया है और अनुभव कर रहे है; उसका लेखा देने पड़ेगा, इसे लूका 16:1 में पढ़ते है। आखरी में जो आपको सौपा गया है : आप ने उसे क्या बढ़ाया है ? या एक तोड़ा पाने वाले के समान (मत्ती 25:15-30) क्या अपने मिट्टी में छुपा दिया है ? आप अपने आपको जांझकर देखें। विशेष भण्डारी के समान जीवन जीने में परमेश्वर आपको अनुग्रह प्रदान करेंगा। आमीन्।

प्रार्थना का विषय

1. कलीसियाओं में आने वाले मसीही गुण प्रकट करने के लिये प्रार्थना करें।
2. जिन सीानों में कलीसिया की इमारत् नही है, उन स्थानों में इमारत् बनने के लिये प्रार्थना करें।
3. सेवकों का जीवन आदर्श से भरा हुआ रहे, इसके लिये प्रार्थना करें।
4. मिश्न संस्थाओं की सुरक्षा, उन्नति एवं आशीष के संग सेवा देने के लिये प्रार्थना करें।
5. नवज़वान एवं बलिकाओं की सुरक्षा बनी रहने के लिये प्रार्थना करें।
6. वैज्ञानिक विभाग से जुड़े हुओ कि आरोग्यता एवं सुरक्षा बनी रहने के लिये प्रार्थना करें।
7. शासकी एवं गैर शासकी में कार्य करने वालों की उन्नति एवं आशीष के लिये प्रार्थना करें।
8. कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों की भविष्य उज्जवलमय होने के लिये प्रार्थना करें।
9. देश भर में रोजगारी बढ़ने के लिये सरकार नये कदम उठाने एवं अमल करने के लिये प्रार्थना करें।
10. देश, राज्य, क्रेन्द सक्षित प्रदेशों में शासन करने वाले पूरे इमानदारी एवं विश्वासयोग्यता के संग राज्य करने के लिये प्रार्थना करें।
11. ह्रैद्रारबाद, अल्लाहबाद, उज्जैन, सूरत में सुरक्षा बनें रहने और इन शहरों की उन्नति होने के लिये प्रार्थना करें।
12. उत्तरप्रदेश, तेलुगाना, उत्तराखण्ड़, ओड़िसा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, असाम में निवास करने वालों की सुरक्षा एवं इन राज्यों की समस्याओं का निवार्ण होने के लिये प्रार्थना करें।
13. प्राकृतिक हानि देश में न आने के लिये प्रार्थना करें।
14. महामरी देशों में न फैलने के लिये प्रार्थना करें।
15. आस्ट्रेरिया, यूरोप, आमेरिका में आने वाली प्रकृतिक हानि से लोग सुरक्षित बचने के लिये प्रार्थना करें।

जरूरतें

1. प्रत्येक मिशनेरी की सहायता की राशी रू. 5,000/– है।

2. प्रत्येक मिश्न फिल्ड्रों में विशेष प्रोग्राम कराने का खर्च रू. 2,000/– है।

3. मिशनेरी बच्चों की पढ़ाई का खर्च रू. 1,000/– है।

इन सभी जरूरतों के लिये प्रार्थना के संग मद्द करें। जिसके द्वारा आप हमारे संग मिलकर प्रभु परमेश्वर की राज्य की बढ़ौतेरी में सहयोगी रहेंगे। जिसका प्रतिफल परमेश्वर आपको इस पृथ्वी में जरूर प्रदान करेगा। क्योंकि 'हर्ष से देने वालो से परमेश्वर प्रिय रहता है'। आप हर्ष से अपना अनुदानों को बैकों के द्वारा भेज सकते है :–

You can scan & donate us

Dhaya Ministries and Charitable Trust

UNION BANK OF INDIA		STATE BANK OF INDIA
A/c. No. 527102010312844	Or	A/c. No. 30916103538
IFS Code: UBIN0552712		IFS Code: SBIN0001515

Address: T8/510, Sagar Lake View Homes, Ayodhya Bye Pass Road, Piplani Post, Bhopal (M.P.) - 462022 Visit us:www.dhayaministries.org, Email:info@dhayaministries.org

पुस्तक मौजूद है

1. **'परिवारिक जीवन की मधुर रहस्य'** – यह पुस्तक परिवार के सलाह पर आधरित लिखी गई है। जिसके द्वारा आपका परिवार आशीषित हो, और आपका परिवारिक जीवन मधुर के संग जीने के लिये उपयोगिक है। इसका मूल्य मात्र रू.25/– है।

2. **'गीत की किताब'** – इस पुस्तक में 150 गीत, 100 स्तुति, 11 विशेष प्रार्थना, 25 प्रतिज्ञा और प्रत्येक दिन बाईबल ध्यान करने वाला पाठ भी संग्लन है। इसका मूल्य मात्र रू.50/– है।

यदि आप पुस्तकें प्राप्त करना चाहते है तो पुस्तक की मूल्य संग पोस्ट का खर्च रू.50/– के संग भेजे। इसका मूल्य QR Code Scan कर भेजे या मनीआर्डर / डी.डी. / चेक / ऑन लाईन DHAYA MINISTRIES & CHARITABLE TRUST क बैक के नाम से भेजकर पुस्तक प्राप्त कर सकते है।

मिश्न समाचार

स्तुति का विषय

1. मिश्न फिल्ड़ों में बिना किसी रूकावट से क्रिस्मस प्रोग्राम चलाने में प्रभु परमेश्वर ने मद्द की। प्रभु की स्तुति हो।
2. अनेक लोग बड़े हर्ष से क्रिस्मस प्रोग्राम में शामिल हुये। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
3. मिशनेरीयों एवं उनके परिवारों, और मिश्न फिल्ड़ों को वर्ष भर परमेश्वर ने सुरक्षा प्रदान की। प्रभु की स्तुति हो।
4. पिछले वर्ष में परमेश्वर ने मिश्न फिल्ड़ों और मिशनेरीयों की जरूरतें पूरी की। प्रभु का धन्यवाद हो।
5. मिश्न फिल्ड़ों में चलाई जाने वाली प्रार्थना सभायें बिना किसी रूकावट से चलाने में परमेश्वर ने मद्द की। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
6. सर्प काटने से लक्ष्मी बेहोश हो गई, प्रार्थना के मध्यम से वह चंगी हो गई और होश में भी आ गई। प्रभु का धन्यवाद हो।
7. कोसी को पेट और कमर दर्द से चंगाई मिली। प्रभु की स्तुति हो।
8. भगतसिंह की अंतिम साँस चल रही थी, जब प्रार्थना करवाया गया तब वह जिन्दा हो गया। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
9. सोमनाथ छाती के दर्द से चंगाई प्राप्त की। प्रभु की स्तुति हो।
10. बिना रूकावटों से पत्रिकायें वर्ष भर प्रकाशसित करने में परमेश्वर ने सहायता की। प्रभु परमेश्वर का धन्यवाद हो।
11. जो यात्रायें सेवकाई के द्वारा वर्ष भर किया गया, परमेश्वर ने उन यात्राओं में अपनी सुरक्षा प्रदान की। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
12. अनेक कलीसियाओं की जागृति के लिये प्रभु ने द्वार खोला। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
13. प्रभु परमेश्वर ने वर्ष भर की प्रार्थनायें सुनकर बड़े सामर्थ्य एवं अद्भुत कार्यों को किया। प्रभु की स्तुति हो।
14. दया सेवकाई की सारी जरूरतें परमेश्वर ने अपने भण्डार से पूरा किया। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
15. दया सेवकाई से जुड़े – प्रार्थना योद्धाओं, सेवकों, दानदाताओं, पाठकों, प्रेमियों, मिशनेरी एवं विश्वासीयों के जीवन के द्वारा प्रभु ने सामर्थ्य के कार्य किये और सभी को अपनी सुरक्षा, आरोग्यता एवं आशीषों से भरपूर किया। प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।

प्रार्थना का निवेदन

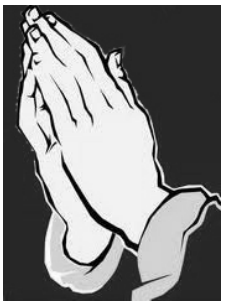

1. क्रिस्मस प्रोग्राम में जिन्होंने भाग लिया, उनके जीवन में परिवर्तन आने और वे अपने जीवन में प्रभु यीशु को मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करने के लिये प्रार्थना करें।
2. मिश्न फिल्ड़ों में जो सम्पर्क में आते है, वे अपने जीवन में प्रभु यीशु को स्वीकार करने के लिये प्रार्थना करें।
3. मध्यप्रदेश और छतीसगढ़ के मिश्न फिल्ड़ों में चर्च के लिये भवन बनाने और उसकी जरूरतें पूरी होने के लिये प्रार्थना करें।
4. करेगाँव में बोर की आवश्यकता है, उसकी जरूरतें पूरी होने के लिये प्रार्थना करें।
5. अन्नु को फिट की बिमारी है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
6. सिंगारोबाई को दूष्ट आत्मा से छुट्कारा मिलने के लिये प्रार्थना करें।
7. साधना और तुलसीबाई को सन्तान की आशीषें मिलने के लिये प्रार्थना करें।
8. बपतिस्मा के लिये 11 लोग तैयार है, बिना किसी रूकावट से बपतिस्मा होने के लिये प्रार्थना करें।
9. मध्यप्रदेश और छतीसगढ़ में चलने वाली मिश्न सेवकाई के द्वारा अनेक आत्मायें मिलने के लिये प्रार्थना करें।
10. नए क्षेत्रों में मिशनेरी भेजने और उनकी जरूरतें पूरी करने के लिये नये दानदातायें मिलने के लिये प्रार्थना करें।
11. जिन्होंने बपतिस्मा लिया है, वे प्रभु में बने रहने के लिये प्रार्थना करें।
12. मिश्न फिल्ड़ों में विरोद्ध करने वाले प्रभु परमेश्वर के प्रेम को जानने के लिये प्रार्थना करें।
13. पंचायत के मुख्याओं और ब्लाक अधिकारीयाँ सुसमाचार सुनाने के लिये सहयोगी बनने के लिये प्रार्थना करें।
14. परमेश्वर अपनी सामर्थ्य और वरदानों से मिशनेरीयों और सेवकों को उपयोग करने के लिये प्रार्थना करें।
15. पाठकों, प्रार्थना योद्धाओं, दानदाताओं, सहयोगीयों, कमेटी के सद्स्यों, सेवकों, मिशनेरीयों एवं विश्वासीयों – इन सभी की सुरक्षा, उन्नति, आरोग्यता और जरूरतें पूरी होने के लिये प्रार्थना करें।
16. सेवकाई के द्वारा की जाने वाली यात्राओं में सुरक्षा मिलने, हमेशा परमेश्वर के द्वारा मार्गदर्शन मिलते रहने और परमेश्वर के द्वारा सामर्थ्य के संग सेवा करने के लिये प्रार्थना करें।
17. भारत भर की कलीसियाओं में प्रवचन के लिये नए द्वार खुलने और परमेश्वर की इच्छा लोगों को अवगत कराने के लिये प्रार्थना करें।

प्रार्थना का विषय

1. परिक्षा के लिये तैयारी करने वाले छात्रों को ज्ञान, बुद्धि एवं स्मरण शक्ति मिलने के लिये प्रार्थना करें।
2. यात्रीयों की सुरक्षा के लिये प्रार्थना करें, जो यात्रा के कारण जल–तल–वायु में सफर करते है।
3. पुलिस विभाग में कार्य करने वाले पुलिस कर्मचारीयों की सुरक्षा, उन्नति एवं मन फिराव के लिये प्रार्थना करें।
4. समाजिक चेतना लोगों के बीच आने के लिये प्रार्थना करें।
5. देश के नेताओं के लिये प्रार्थना करें, कि वे देशवासियों की उन्नति, सुरक्षा एवं आशीष की ओर ले जाने के लिये योजनाये बनाये एवं उसे अमल कर पाये।
6. भ्रष्टाचार करने वालों के बीच में परिवर्तन आने के लिये प्रार्थना करें।
7. देश भर में सुरक्षा बने रहने के लिये प्रार्थना करें।

सुसमाचार की सभायें
उपवासिक की सभायें
जागृति की सभायें
मिशनेरी भेजना
बाईबल टिचिंग
सेमिनार्स
पत्रिका
रेट्रिट्स
यूथ मिनिस्ट्री
सामाजिक चेतना
मध्यस्था की प्रार्थना
सेवकों को स्फूर्तिवान बनाना

आवश्यक प्रार्थना के लिये
Cell No. 09893141410, 08871452038

Printed Matter only

To.....
.....
.....
.....
.....

Return Requested to:
Post Box No.01
DHAYA JOTHI
Dhaya Ministries
Address : T8/510, Sagar Lake View Homes, Ayodhya Bye Pass Road, Piplani Post, Bhopal (M.P.) - 462022